भूमिका

आत्मनिवेदनपरक कविताओं की दृष्टि से 'विनयपत्रिका' भक्ति साहित्य का प्रतिनि ग्रंथ है। आधुनिक काल के साहित्य में सर्वाधिक विनयगीत निराला के यहां मिलते परवर्ती रचनाओं में निराला की विनयभावना और निखरकर सामने आती है। इस दृष्टि 'विनयपत्रिका' और 'अणिमा' से 'सान्ध्यकाकली' तक की रचनाओं का तुलनात्मक अध्य महत्वपूर्ण हो सकता है। 'विनयपत्रिका' तुलसीदास की काव्ययात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव इसकी भावभूमि वही नहीं है जो 'रामचरितमानस' की है। 'अणिमा' से निराला के यहां ' ढंग के यथार्थवाद' की शुरूआत दिखायी पड़ती है। उनकी काव्यदृष्टि में छायाव उच्छ्वास का अभाव पाया जाता है। इस नये यथार्थवाद के केन्द्र में विनयगीतों को र जा सकता है। तुलसीदास और निराला दोनों की परवर्ती रचनाओं में यथार्थबोध आत्म धरातल पर अभिव्यक्त हुआ है, जिसमें करुणा की गहरी धारा अन्तर्व्याप्त है।

बकौल रामविलास शर्मा महाभारत का कुरूक्षेत्र, धर्मक्षेत्र भले रहा हो, साहित्य क्षेत्र निराला के लिए सूकर खेत ही था। यह बात अलग है कि तुलसीदास की तरह निराला ज्ञान–नेत्र इस सूकर खेत में ही खुले (परम्परा का मूल्यांकन, पृ.–120)। यह संयोग परम्परा की निरन्तरता की सूचना देता है। आचार्यों में इस 'सूकरखेत' को लेकर का विवाद है। प्रस्तुत शोध–प्रबंध के विषय पर भी ऐसी ही स्थिति है। प्रयास किया गया है इस विवाद में अन्तर्निहित सामान्य सूत्रों की पहचान की जाय। अतः जोर निरन्तरता पर है, 'विवाद' पर नहीं। इस क्रम में दोनों महाकवियों के बीच अलगाव के बिन्दुओं को भी दे गया है। वैसे यह अलगाव न होकर विशिष्टता है। इसी अर्थ में इसे विकास कहा जा सव है। अपने आदर्श कवि तुलसीदास के साथ निराला के संबंधों के बारे में 'अभिन्न' ३ 'भिन्न' की यही व्याख्या उचित है।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध "विनयपत्रिका और निराला के विनयगीत ('अणिमा' 'सान्ध्यकाकली' तक)" छः अध्यायों में विभक्त है। इन अध्यायों के बाद उपसंहार है। : में पुस्तक–सूची दी गई है। उद्धरणों का सन्दर्भ प्रत्येक अध्याय के अंत में दिया गया

प्रथम अध्याय में 'निराला की काव्यचेतना में तुलसीदास की 'छवि' पर विचार वि गया है। निराला के समीक्षात्मक निबंधों और उनकी रचनाओं, मुख्यरूप से 'तुलसीदास' आधार पर यह दिखाया गया है कि उनकी काव्यदृष्टि और काव्यसंवेदना में तुलसीदास कौन सा स्वरूप अभिव्यक्त हुआ है। तुलसीदास के किन पक्षों को लेकर निराला आगे हैं। किस रूप में तुलसीदास का रचनात्मक विस्तार निराला के यहां हुआ है। दं महाकवियों को जोड़ने वाली आधारभूत विशेषताएं क्या हैं ? इसी क्रम में यह भी दिख

गया है कि निराला की काव्यचेतना में निर्मित तुलसीदास की छवि निराला की आत्मछवि है।

द्वितीय अध्याय 'तुलसीदास और निराला की भक्ति भावना का तुलनात्मक अध्ययन' पर है, यह एक तरह से केन्द्रीय अध्याय है। इसमें यह दिखाया गया है कि दोनों महाकवि किस तरह अपने समय की विचारधाराओं और दार्शनिक मतवादों की समीक्षा करते हुए क्रमशः निस्साधनता की ओर बढ़ते हैं। दोनों कवियों की भक्ति भावना में अभिव्यक्त समाज समीक्षा और आत्मसमीक्षा के स्वरूप को समझने का प्रयास किया गया है। कुछ शास्त्रीय अवधारणाओं के परिप्रेक्ष्य में भी दोनों की भक्ति दिखायी गई है। निराला की भक्तिभावना पर तुलसीदास के अतिरिक्त कबीर और अन्य कवियों के प्रभावों को भी समझने का प्रयास किया गया है। भक्ति संवेदना के प्रति निराला की अनास्था एवं संशय की चर्चा की गई है। निराला की भक्तिभावना के स्वरूप पर विभिन्न विद्वानों के मतों की समीक्षा करते हुए शरणागति, सामाजिक चेतना और आधुनिक मन के बीच पारस्परिक संबंधों को समझने का प्रयास किया गया है।

तृतीय अध्याय में 'तुलसी और निराला के सामाजिक सन्दर्भों की तुलना' की गई है। तुलसीदास मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के अन्तिम दौर के कवि हैं। निराला की 'अणिमा' से 'सांध्यकाकली' तक की रचनाएँ उस समय की हैं, जब नवजागरण की लहर थम चुकी थी। इसमें मध्यकालीन और स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय समाज की विभिन्न संरचनाओं एवं स्तरीकरण की विवेचना की गई है। साथ ही दोनों कवियों के समय के समाज के अन्तर्विरोधों को भी देखने का प्रयास किया गया है। राज्य और जाति की अवधारणा पर विचार करते हुए मध्यकालीन सामंती समाज में विभिन्न वर्गों विशेष रूप से कृषक वर्ग की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। इस क्रम में विभिन्न इतिहासकारों एवं समाजशास्त्रियों के मतों की मदद ली गई है। स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय समाज एवं राज्य के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए समाज–विज्ञान की कुछ अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों के द्वारा उस समय की अस्पष्टता और जटिलता को समझने का प्रयास किया गया है। तुलसीदास का 'हौं' और निराला का 'मैं' जिस समाज से अन्तःक्रिया करते हुए बना है, उसके विविध पक्षों के स्वरूप एवं पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण किया गया है। मध्यकालीन और आधुनिक समाज के मध्य निरन्तरता और परिवर्तन के पहलुओं की जांच करते हुए दोनों कालखण्डों के बीच भावबोध में अन्तर पर भी विचार किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'विनयपत्रिका' के पदों का विषयानुसार विवेचन' है। इसमें तुलसीदास द्वारा निर्द्वन्द्व भाव से की गयी आत्मसमीक्षा, शील निरुपण, मंगलाशा, कलियुग का कोप,

निर्वासन और अकेलेपन की अनुभूति से सम्बद्ध पदों की व्याख्या की गई है। तुलसीदास की निस्साधनता और आत्मनिवेदन के सामाजिक अर्थ को भी समझने का प्रयास किया गया है। 'विनयपत्रिका' तुलसीदास की आत्मकथा है। इसमें उनका व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है। इस अध्याय में यह दिखाया गया है कि विभिन्न भाव संघातों के माध्यम से तुलसीदास का अन्तः एवं बाह्य संघर्ष किस तरह प्रकट हुआ है।

पंचम अध्याय में विवेच्य रचनाओं के आधार पर 'निराला के विनयगीतों का विषयानुसार विवेचन' किया गया है। सुविधा के लिए मातृवन्दना, अस्पष्ट आलम्बन या निर्गुण को सम्बोधित मृत्यु सम्बन्धी विनयगीत, सगुण या नाथ, प्रभु, हरि, राम, कृष्ण, शिव आदि को सम्बोधित गीत और प्रकृतिपरक विनयगीत जैसे उपवर्ग किए गए हैं। निराला किस तरह अपने आराध्य की विशिष्ट और आत्मीय छवि निर्मित करते हैं – यह समझने का प्रयास किया गया है। निराला की विनयभावना किस अर्थ में परम्परागत भक्ति संवेदना से सम्बद्ध और अलग है – इसे देखने का प्रयास किया गया है। इसमें मुख्यरूप से निराला के गीतों में अभिव्यक्त विनयभावना के साथ सामाजिक चेतना, रागात्मक दृष्टि और मुक्तिकामना के संबंधों की जाँच की गई है।

षष्ठ अध्याय 'तुलसीदास और निराला की वेदना का तुलनात्मक अनुशीलन' पर है। दोनों कवियों की भक्तिभावना में जितनी समानता है, उससे कहीं अधिक वेदना की बनावट में है। इसमें जीवन–चरित के स्थान पर रचनाओं को ही आधार बनाया गया है। यह दिखाया गया है कि दोनों कवियों का अन्तः एवं बाह्य संघर्ष किस तरह उनकी रचनाओं में उभरकर आता है। साथ ही उनकी वेदना में कितनी गहराई और व्यापकता है। इसी क्रम में निराला की वेदना के उन पक्षों को देखा गया है जो उन्हें आधुनिक मनुष्य की नियति से जोड़ते हैं। दोनों कवियों की वेदना किस हद तक व्यक्तिगत और किस अर्थ में सामान्य है – इसपर विचार किया गया है।

उल्लेखनीय है कि विषयवस्तु के विश्लेषण के क्रम में विवेच्य कृतियों के अतिरिक्त दोनों कवियों की अन्य काव्य रचनाओं और निराला के समीक्षात्मक निबंधों का भी सहारा लिया गया है।

अंत में निष्कर्ष स्वरूप उपसंहार दिया गया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध के विषय पर प्रकाशित सामग्री का अभाव है। दोनों कवियों के इस पक्ष को लेकर एक भी स्वतंत्र लेख मेरे देखने में नहीं मिला। विष्णुकांत शास्त्री ने 'बन शरण का उपकरण मनःनिराला' नामक लेख में दोनों कवियों के तुलनात्मक आधारों की थोड़ी सी

चर्चा की है। रामविलास शर्मा ने 'निराला की साहित्यसाधना–2' में निराला की विनयभावना पर स्वतंत्र रूप से नहीं लिखा है, लेकिन जगह–जगह इस दृष्टि से विचार किया है। निराला की भक्तिभावना पर सिर्फ दो स्वतंत्र लेख उपलब्ध हैं। जानकीवल्लभ शास्त्री का 'भक्त कवि निराला' और दूधनाथ सिंह का उनकी पुस्तक 'निराला : आत्महन्ता आस्था' में संकलित 'प्रपत्ति–भाव' नामक लेख। इस सामग्री का उपयोग करते हुए मुख्य रूप से रचनाओं को ही आधार बनाया गया है।

निवेदन है कि शोध–प्रबंध में '। 2 ।' का अर्थ 'निराला रचनावली खण्ड–2' है। रचनावली के अन्य खण्डों के लिए भी इसी संकेताक्षर का प्रयोग किया गया है। 'विनयपत्रिका' और 'सान्ध्यकाकली' के उल्लेख में एकरूपता का पालन नहीं हो सका है; क्योंकि इन दोनों पुस्तकों के नामों में भिन्नता मिलती है। कहीं 'विनय–पत्रिका' तो कहीं 'विनयपत्रिका'।यही स्थिति 'सान्ध्यकाकली' के विषय में भी है। अन्य पुस्तकों के नामों में भी योजक चिह्न (–) की त्रुटि मिल सकती है। भरसक प्रयास किया गया है कि उद्धरण, संदर्भ–सूची और प्रूफ में अशुद्धि न रहे, फिर भी यदि दिखाई पड़ें, तो इसमें कुछ मेरा और कुछ कंप्यूटर का दोष है।

मधुप कुमार